।।श्री।। महावीराय नमः ।।

जय धर्मदास, जय सौभाग्य, जय आनंद

* जय सूर्य * जय उमेश * जय रूपेंद्र

आओ, बने सच्चे श्रावक

* पाप करने से, करवाने से, करते हुए को अच्छा मानने से पाप-कर्म का बंध होता है।
* पापों का त्याग न करने से पाप-कर्म बंध की क्रिया लगती है।
* पच्चक्खाण करके पाप भाव को छोड़ने वाला अवश्य ही मोक्ष के सुख को पाता है। मोक्ष न मिले वहाँ तक सद्‌गति को प्राप्त करता है।

व्रत धारक का नाम

जिन शासन गौरव आचार्य-प्रवर पू. श्री उमेशमुनिजी म.सा. 'अणु' आगम विशारद पू. श्री जिनेंद्रमुनिजी म. सा. आदि ठाणा 7 के इंदौर वर्षावास (ई. स. 2007) के अवसर पर।

ज्ञान आराधना

1. ज्ञान आराधना के लिए प्रतिदिन.............. मिनट धार्मिक वाचन करूँगा।
2. ज्ञानी या ज्ञान सीखने के साधन प्राप्ति में किसी को अंतराय नहीं दूँगा।
3. ज्ञान-साधनों को नष्ट नहीं करूँगा और अन्य को उन साधनों को जुटाने के लिए यथाशक्ति सहयोग दूँगा।

दर्शन-आराधना

1. अरिहंत भगवंत और सिद्ध भगवंत को धर्म देव के रूप में धारण करता हूँ।
2. पंच महाव्रत धारी साधु-साध्वी भगवंतों को मेरे धर्म गुरु के रूप में धारण करता हूँ।
3. केवली भगवतों द्वारा प्ररुपित दयामय धर्म को धारण करता हूँ।
4. देव-गुरु और धर्म को स्मरण करके प्रतिदिन नौ वंदना करूँगा।
5. पंच परमेष्ठी की आराधना के लिए प्रतिदिन नवकार मंत्र की .... माला गिनूँगा।
6. फूल-पत्ती दीपक अगरबत्ती आदि के प्रयोग में धर्म नहीं मानूँगा।

चारित्र-आराधना

पहला अणुव्रत- अहिंसा व्रत

1. निर्दोष पंचेंद्रिय जीवों को मारने की बुद्धि से मारूँगा नहीं और दूसरे से मरवाऊँगा नहीं।
2. कुत्ता, तोता, खरगोश आदि पशु-पक्षियों को बिना कारण से पिंजरे में बंद नहीं करूँगा।
3. माँस-मदिरा का सेवन नहीं करूँगा।
4. शिकार नहीं करूगाँ।
5. आत्महत्या नहीं करूँगा।
6. होली जलाऊँगा नहीं और रंग से खेलूँगा भी नहीं।
7. पटाखे नहीं छोड़ूँगा।
8. फूल, माला, वेणी आदि धारण नहीं करूँगा।
9. नशे के लिए गांजा, शराब, अफीम, चरस, तंबाखूयुक्त कोई भी गुटका आदि मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करूँगा।
10. जमीकंद (कंदमूल-आलू, प्याज आदि) खाऊँगा नहीं या माह में/ वर्ष में......... दिन के...... त्याग करूँगा।
11. कुँआ, तालाब, नदी, स्वीमिंग पूल, फव्वारा बारिश आदि में स्नान नहीं करूँगा।
12. गर्भपात नहीं करूँगा, करवाऊँगा नहीं और करते हुए का अनुमोदन नहीं करूँगा।
13. रेशम (सिल्क) के वस्त्र नहीं पहनूँगा या नए नहीं खरीदूँगा।
14. पशुओं को कसाइयों के हाथों नहीं बेचूँगा और उनकी दलाली नहीं करूँगा।
15. बड़ी हिंसा हो ऐसी योजना में अपना मत दूँगा नहीं, एवं ऐसी कंपनी के शेयर खरीदूँगा नहीं।
16. मच्छर, मकौड़े, कसारी, चूहे,खटमल आदि जंतुनाशक दवाइयों का उपयोग नहीं करूँगा या महीने में......... दिन का त्याग करता हूँ।
17. कीटनाशक दवाइयाँ नहीं बेचूँगा।
18. वर्ष में..... माह पंखा, कूलर, एसी., हीटर, गीजर आदि का उपयोग नहीं करूँगा।
19. चाँदी के वरक वाले पदार्थ नहीं खाऊँगा।
20. चमड़े की वस्तुओं का प्रयोग नहीं करूँगा।

दूसरा अणुव्रतः मृषावाद विरमण व्रत

1. सगाई के लिए झूठ नहीं बोलूँगा।
2. झूठी गवाही नहीं दूँगा।
3. झूठा कलंक नहीं लगाऊँगा।
4. किसी को अप्रैल फूल नहीं बनाऊँगा।
5. किसी को फाँसी या उम्रकैद मिले ऐसा झूठ नहीं बोलूँगा।
6. विधवा स्त्री आदि किसी की धरोहर को दबाने के लिए झूठ नहीं बोलूँगा।

तीसरा अणुव्रत : अचौर्य व्रत

1. ताले तोड़कर, दीवार खोदकर, चोरी नहीं करूँगा।
2. शस्त्रादि द्वारा किसी को लुटूँगा नहीं।
3. धार्मिक माल-मिलकियत-जमीन-भवन की चोरी नहीं करूँगा। एवं धार्मिक धन में गबन नहीं करूँगा।
4. तस्करी नहीं करूँगा।
5. नकली नोट नहीं बनाऊँगा।
6. अधिक लाभ कमाने की दृष्टि से खाने की चीज, दवाई आदि में मिलावट नहीं करूँगा। रोग उत्पन्न हो ऐसी मिलावट नहीं करूँगा।
7. बिजली, पानी, कर आदि की चोरी नहीं करूँगा।
8. चोरी का माल नहीं खरीदूँगा।

चौथा अणुव्रत : ब्रह्मचर्य व्रत

1. पर-स्त्री पर-पुरुष के साथ अब्रह्मचर्य का सेवन नहीं करूँगा।
2. वेश्यागमन नहीं करूँगा।
3. मैरिज ब्यूरो नहीं चलाऊँगा।
4. महीने में....... दिन अब्रह्म का सेवन नहीं करूँगा।
5. आयु के......... वर्ष बाद पूर्णतः ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।
6. रोज........ घंटे से ज्यादा टीवी नहीं देखूँगा।
7. समाज में निंदा हो ऐसी फिल्में नहीं देखूँगा। ऐसी पत्रिकाएँ नहीं पढ़ूँगा।
8. स्वयं के पुत्र-पौत्रादि के अलावा किसी के विवाह (परविवाह) की बात नहीं करूँगा।

9. विवाह के पूर्व तक पूर्णतः ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।
10. कृष्ण पक्ष / शुक्ल पक्ष में ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।

पाँचवाँ अणुव्रत : इच्छा परिमाण व्रत

1. मेरे नाम से................ मकान, ... दुकान, ... गोडाऊन, ... एकड़ खुली जमीन से ज्यादा नहीं रखूँगा।
2. .... ग्राम सोना, ... किलो चाँदी से ज्यादा नहीं रखूँगा।
3. प्रतिवर्ष............. लाख या........... करोड़ से ज्यादा मुनाफा हुआ तो उसे धार्मिक कार्य में व्यय करूँगा।
4. प्रतिवर्ष......... जोड़ से ज्यादा वस्त्र नहीं रखूँगा।
5. विशेष प्रसंग के अलावा.......से ज्यादा नौकर और........ से अधिक पशु नहीं रखूँगा।

छठा व्रत : दिशा परिमाण व्रत

1. भारत से बाहर काया से जाकर पाँच आश्रय सेवन का त्याग करता हूँ।
2. ....बार से ज्यादा भारत के बाहर काया से जाकर पाँच आश्रव सेवन का त्याग करता हूँ।

सातवाँ व्रतः उपभोग परिभोग- परिमाण व्रत

1. प्रतिदिन भोजन निमित्त........ द्रव्यों से अधिक का उपयोग नहीं करूँगा।
2. वर्ष में......... जोड़ से ज्यादा जूते-चप्पल नहीं वापरूँगा।
3. डेकोरेशन के लिए फूलों का उपयोग नहीं करूँगा।
4. बड़े जिमनवार में कंदमूल का उपयोग नहीं करूँगा।
5. प्रतिदिन स्नान में........... बाल्टी से ज्यादा पानी का उपयोग नहीं करूँगा। महिने में .... दिन स्नान का त्याग करता हूँ।
6. वर्ष में.......... प्रकार की टूथपेस्ट, ... प्रकार का साबुन........... प्रकार के शेम्पू से अधिक का उपयोग नहीं करूँगा।
7. माह में........... दिन रात्रि भोजन का त्याग करता हूँ।
8. माह में............. दिन होटल में नहीं जाऊँगा।
9. पंद्रह कर्मादान में से .... प्रकार के कर्मादान के सिवाय अन्य कर्मादान के त्याग करता हूँ।
10. बड़े जीमनवार में.......... द्रव्य से ज्यादा नहीं खाऊँगा।

आठवाँ व्रत : अनर्थ दण्ड विरमण व्रत

1. सट्टा, जुआ आदि नहीं खेलूँगा।
2. नाटक, सिनेमा, सर्कस साल में .... से ज्यादा नहीं देखूँगा।
3. धर्म के निमित्त से गरबे, आर्केस्टा आदि कार्यक्रम नहीं करूँगा।
4. बम, बंदूक आदि शस्त्रों का उपयोग नहीं करूँगा।
5. आगे रहकर किसी को चाकू, मिक्सर, गेती, फावड़ा, सब्बल, सरोता आदि ले जाकर वापरने का नहीं कहूँगा।
6. घर के आसपास फूल, पौधे आदि नहीं बोऊँगा। नए रोप, फूल के गमले आदि नहीं लूँगा।
7. गैस, चूल्हा पुंजे या देखे बिना नहीं वापरूँगा।
8. बिना वजह पंखा, लाइट, नल, गीजर, हीटर आदि चालू नहीं रखूँगा।
9. ईर्ष्यावश किसी के मकान, गोडाऊन, दुकान में आग नहीं लगाऊँगा व नहीं लगवाऊँगा।
10. दिपावली में दीए नहीं जलाऊँगा, लाइट डेकोरेशन नहीं करूँगा।
11. मंत्र-तंत्र विद्या के नाम से हिंसक प्रवृत्ति के प्रयोग नहीं करूँगा।

नवमाँ व्रत : सामायिक व्रत

1. महिने में.............. सामायिक करूँगा।

दसवाँ व्रत : देशावगासिक व्रत

1. नवकार मंत्र गिने बिना घर, दुकान या ऑफिस के बाहर नहीं जाऊँगा। (भूल-चूक हो तो आगार)
2. तेल, घी, गुड, शक्कर, दूध, दही में से एक विगय का रोज त्याग करूँगा।
3. यथाशक्य प्रतिदिन चौदह नियम चितारुँगा।

ग्यारहवाँ व्रत : पौषध व्रत

1. वर्ष में.......पौषध करूँगा। (एकासन, बियासन, आयंबिल, उपवास, नींवी आदि भी पौषध में गर्भित है।)
2. वर्ष में .... दयाव्रत करूँगा।

बारहवाँ व्रत : अतिथि संविभाग व्रत

1. प्रतिदिन भोजन के समय साधु-साध्वी को बहराने की भावना भाऊँगा।
2. द्वेष वश जान-बूझकर घर असूझता नहीं करूँगा।
3. साधु-साध्वी को विहार में निर्दोष आहार-पानी की दलाली करूँगा।
4. अपने क्षेत्र में साधु-साध्वी विराजमान हो तो मैं कच्चा पानी नहीं पिऊँगा।
5. अपने क्षेत्र में साधु-साध्वी विराजमान हो तो मैं रात्रि भोजन नहीं करूँगा।
6. अपने क्षेत्र में साधु-साध्वी विराजमान हो तो मैं यथाशक्य सामूहिक भोज में नहीं जाऊँगा।

चौदह नियम
(दसवें व्रत में गर्भित हैं।)

1. सचित्तः जीव सहित वस्तु अर्थात कच्चा नमक, कच्चा पानी, पत्ते, फल, फूल, मूल, शाक, बीज आदि कोई भी सचित्त वस्तु जो छेदन-भेदन होकर या अग्नि आदि का शस्त्र पाकर अचित्त न हुई हो, उसका परिमाण या त्याग करना।
2. द्रव्यः रोटी, दाल, चावल खिचड़ी आदि।
3. विगयः दूध, दही, घी, तेल, शक्कर, मिठाई आदि।
4. उपानहः जूते, चप्पल, मोजे आदि।
5. ताम्बूलः मुखवास, पान-सुपारी, लौंग, इलायची आदि।
6. वस्त्रः पहनने ओढ़ने के सब कपड़े।
7. कुसुमः सूँघने की वस्तु - फूल, माला, इत्र आदि।
8. वाहन : घोड़ा, हाथी, जहाज, मोटर, स्कूटर, साइकिल, ताँगा, नौका आदि।

9. शयन : पलंग, खाट, बिछौने, कुर्सी आदि।
10. विलेपन : चंदन, तेल, उबटन आदि।
11. ब्रह्मचर्य : अब्रह्म की मर्यादा, गंदे चित्र- साहित्य।
12. दिशा : ऊँची, नीची, तिरछी पूर्वादि दिशा का परिमाण।
13. स्नान : स्नान के जल की तथा स्नान की संख्या की मर्यादा।
14. भत्त : मिष्ठान आदि भोजन तथा भोजन का परिमाण।

सूचना : मर्यादित जीवन जीने के लिए श्रावक-श्राविकाओं को प्रतिदिन प्रातः 14 नियम ग्रहण करना चाहिए। उपरोक्त 14 बातों की आवश्यकतानुसार जितनी मर्यादा रखनी हो, उसके उपरांत का त्याग कर लेना चाहिए।

जितना त्याग उतना ही सुख-शांति !

संकल्प - पच्चक्खाण

मैं अव्रत के भाव छोड़कर पूज्य श्री/ पूज्या श्री --के समक्ष 12 व्रत (पूर्ण रूप से/ .... वर्ष के लिए धारणानुसार अंगीकार करता हूँ। आत्मा की साक्षी से पालन करूँगा। व्रत ग्रहण दिनांकः ...... /......./.....

विशेष नियम

1. अँगूठी के पच्चक्खाण से एक दिन में लगभग 22 घंटे की चोविहार तपस्या होती है।
2. रात्रि भोजन त्याग से प्रतिवर्ष छ(कोलन) मासी तप का फल मिलता है।
3. चौदह-नियमों की मर्यादा से पर्वत जितना पाप राई जितना हो जाता है।
4. बीज, पंचमी, अष्टमी, ग्यारस, चौदस, पक्खी ये पर्व तिथियाँ है। इन दिनों में ब्रह्मचर्य पालन तथा रात्रि भोजन / बड़ा स्नान / सचित्त पदार्थ त्याग / जमीकंद आदि का त्याग अवश्य करना चाहिए।
5. पक्खी-प्रतिक्रमण भी अनिवार्य रूप से करना चाहिए।

पच्चक्खाण लेने का पाठ

इस प्रकार जो मैंने मर्यादा व आंगार रखे हैं। उसके उपरांत अपनी समझ व धारणा अनुसार दवाई का आगार रखते हुए उपयोग सहित त्याग एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पच्चक्खाण पारने का पाठ

देसावगासियं......... पच्चक्खाण कयं तं पच्चक्खाणं सम्मं काएणं, फासियं, पालियं, सोहियं, तीरीयं, किट्टियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं भवई, जं च न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(तीन नमस्कार सूत्र का स्मरण करना।)